Class Notes	
कक्षा: चौथी	नीति के दोहे (कंठस्थ करने के लिए)
विषय: हिंदी	

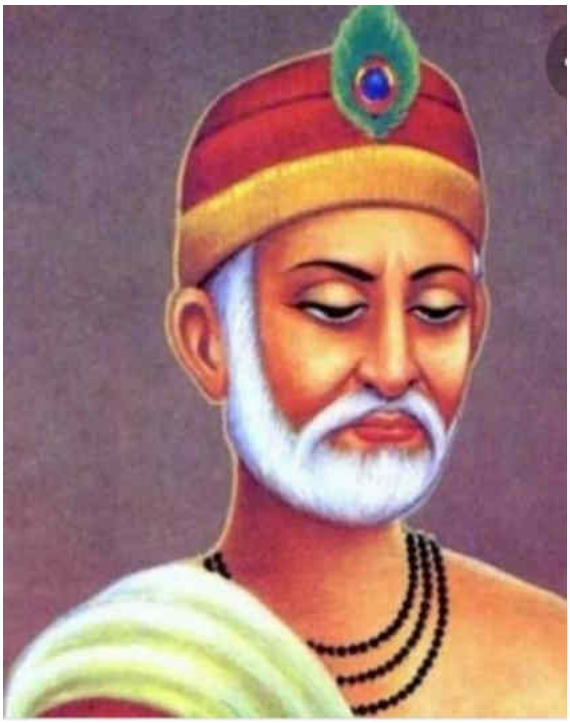

कबीरदास जी के दोहे

१. दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय
जो सुख में सुमिरन करे, दुख काहे को होय।।

२. माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारी के, मन का मनका फेर।।

३. बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय
जो मन खोजा आपना, मुझसा बुरा ना कोय।।

४. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करोगे कब।।

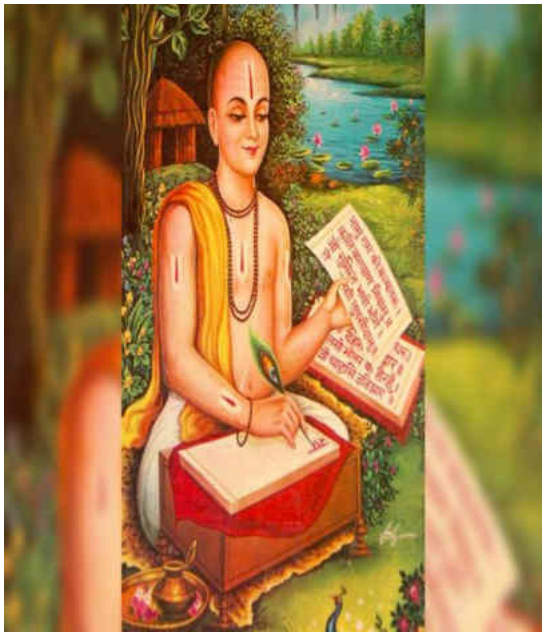

तुलसीदास जी के दोहे

१. तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर |
बसीकरन एक मन्त्र है, परिहर वचन कठोर ||

२. आवत ही हरषै नहीं ,नैनन नहीं सनेह |
तुलसी तहाँ न जाइए ,कंचन बरषै मेह ||

३. तुलसी इस संसार में, सब सो मिलिए धाय |
ना जाने किस भेस में ,नारायण मिलि जाय ||

४. दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान |
तुलसी दया न छांड़िए, जब लागे घट में प्रान||

उपरोक्त लेखन सामग्री घर पर ही रहकर तैयार की गई है।